शेख़ फ़रीद – सबद ७५
जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥
कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥७२॥

सार: अहं यदि विनम्रता को स्वीकार नहीं करता तब धीरे-धीरे अपनी ही गरिमा को कमज़ोर कर देता है। जो बाहर से शक्तिशाली प्रतीत होता है, वह भीतर से नाज़ुक होता है क्योंकि वह बिना सवाल किए फलता-फूलता है। विनम्रता के बिना व्यक्ति शक्ति को ही वास्तविक मूल्य समझने की भूल कर सकता है। सम्मान माँगा नहीं जाता, उसे पारदर्शिता और सच्चाई से अर्जित करना पड़ता है। जब अहं सुधार को अस्वीकार करता है तब वह उसी सम्मान को घटा देता है जिसे वह बनाए रखना चाहता है। गरिमा ऊँची आवाज़ रखने वालों की नहीं बल्कि सीखने और बदलने की क्षमता रखने वालों की होती है।

जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥
जो सिर सर्वव्यापक सत्ता के सामने नहीं झुक सकता, वह सिर किस काम का? यह दर्शाता है कि घमंडी कठोरता विपरीत असर करती है क्योंकि झुकने से इनकार आंतरिक ज्ञान को रोक देता है।

कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥७२॥
वह सिर्फ़ खाना पकाने के बर्तन के नीचे की लकड़ी की तरह जलाने के लिए उपयुक्त है। यह अहं के पतन का प्रतीक है, जागरूकता की कमी अंततः संसारिक पीड़ा की आग का ईंधन बन जाती है। (७२)

तत्त्व: गुरु अर्जन ने शेख़ फ़रीद के सुझाव की पुष्टि की कि जब हम अहंकार से बंधे रहते हैं तब यह अज्ञानता का चक्र शुरू करता है क्योंकि वास्तविकता बार-बार उस चीज़ को सुधारती है जिसे अहं

स्वीकार नहीं करता। यह भ्रम सामायिक होता है, जो तारीफ़, नियंत्रण या इनकार से बना रहता है। अंततः, जीवन इन भ्रमों को दूर कर देता है और भीतर की स्पष्ट सच्चाई सामने आ जाती है। इस पल में, ज़रूरी विकल्प स्पष्ट हो जाते हैं, अपने गहन स्वरूप को स्वीकार करें या झूठी पहचान की आग में जलते रहें। हम या तो वास्तविक जागरूकता में विनम्र बन सकते हैं या निरंतर कष्ट सहने से कठोर बन सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com